हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): _____

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): _____

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

3/24/1

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 137½ टिप्पणी (Remarks): _____

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) यहु तन जालौं मसि करूं, ज्यूं धुंवां जाई सरग्गि।
मति वै राम दया करै, बरसि बुझावै अग्गि।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियां भक्तिकालीन कवि कबीरदास द्वारा रचित दोहा है, जिसे ~~कबीर~~ ग्रंथावली से ली गई है।

व्याख्या ⇒ कबीरदास जी ईश्वर से मिलने को व्याकुल

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियां कबीरदास द्वारा रचित हैं। इन पंक्तियों को श्यामसुंदरदास द्वारा 'कबीर ग्रंथावली' में संकलित किया गया है।

व्याख्या ⇒ कबीर ईश्वर से मिलने को व्याकुल है। वह स्वयं का ईश्वर से एकत्व चाहते हैं। वह कहते हैं कि मैं अपने शरीर को जलाना चाहता हूँ, जिससे इसका धुंआ स्वर्ग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में पहुँच सके। इससे ईश्वर मुझपर दया दृष्टि करेंगे और वह अपनी प्रेमरूपी बारिश करके इस अग्नि को बुझा देगा। अर्थात् मेरा ईश्वर से मिलन संभव होगा।

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में कबीर के भावनात्मक रहस्यवाद का निदर्शन होता है।

(ख) भाषा सधुक्कड़ी है, जिसमें राजस्थानी, पंजाबी एवं अवधी भाषा के शब्दों का समावेशन है।

(ग) इन पंक्तियों में कबीर की ईश्वर से मिलने की तड़प को दर्शाया है। इसमें किसी बाह्य आडम्बर को स्वीकार नहीं किया गया है।

(घ) ईश्व की प्राप्ति हेतु सर्वत्र अर्पण करने के लिए कबीर तत्पर है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) उर में माखनचोर गड़े।
अब कैसेहू निकसत नहिं, ऊधो ! तिरछे ह्वै जो अड़े।।
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े।।
को बसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझै।
सूर स्यामसुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझै।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यखण्ड सूरदास द्वारा रचित 'भ्रमरगीतसार' से ली गई है।

व्याख्या ⇒ कृष्ण के वियोग में व्याकुल गोपियाँ ऊधो को मजाक बनाते हुए कहती हैं। कि ऊधो श्री कृष्ण को वह निकालना तो चाहती हैं, किंतु वह उनके हृदय में तिरछे समाए हुए हैं अत: वह उन्हें हृदय से नहीं निकाल पा रही है। गोपियां कहती हैं कि श्रीकृष्ण मथुरा जाकर भले ही स्वयं को यदुवंशी कहने लगे हों, किंतु हमारे लिए श्रीकृष्ण आज भी "यादव" वंशी अर्थात् अहीर ही है। ~~कृष्ण~~ कृष्ण के पिता वसुदेव, देवकी को कोई नहीं जानता है। गोपियां कहती हैं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कि श्रीकृष्ण के दर्शन के बिना उन्हें इस संसार में कुछ भी दिखाई नहीं देता।

विशेष ⇒ (क) ब्रज भाषा का सौंदर्य अप्रतिम है।

(ख) बिंब योजना अद्वितीय है।

(ग) गोपियों का ऐसा विरह वर्णन हिंदी साहित्य में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता है।

(घ) देशज शब्दों जैसे - अहीर इत्यादि का भी प्रयोग किया गया है।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जीऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ जायसी नागमती के विरह का वर्णन कर रहे हैं। नागमती रत्नसेन के वियोग में व्याकुल है। वह कहती है कि वसंत आने के कारण ~~कोयली~~ कोयल बोलने लगी है, किंतु मेरा पति मेरे साथ नहीं है। अतः मेरे लिए वसंत का कोई महत्व नहीं है। नागमती कहती है कि वर्षा ऋतु आ गई, ऐसी स्थिति में उसके घर पर छप्पर कौन छाएगा, क्योंकि उसका पति घर पर नहीं है। वह कहती है कि उसकी जिन सखियों के पति घर पर हैं, वे सभी गर्व अनुभव कर रही

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है, मेरा पति ~~और~~ तो बाहर है अतः मैं तो सब कुछ भूल गई हूँ।

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में नागमती के वियोग का सुंदर वर्णन ~~प्रयोग~~ किया गया है।

(ख) ठेठ अवधी की मिठास अद्वितीय है।

(ग) बारहमासा ~~विरह~~ ऋतु वर्णन शैली को अपनाया गया है।

(घ) बिंब योजना एवं हृदयस्पर्श व्यंजना का प्रयोग किया गया है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नैक हँसो ही बानि तजि, लख्यौ मुहुँ नीठि।
चौका-चमकनि-चौंध मैं परति चौधि सी डीठि।।

बिहारी

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीरदास द्वारा रचित हैं। इन्हें कबीर ग्रंथावली में संकलित किया गया है।

व्याख्या ⇒ कबीर कहते हैं कि ईश्वर के बिना उन्होंने हंसना त्याग दिया है, वह हमेशा ईश्वर की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करते हैं। वह कहते हैं कि उन्होंने चौका अर्थात भोजन बनाने का स्थान को भी ~~अपना~~ महत्व देना छोड़ दिया है। कबीर कहते हैं कि वे अपने घर के बाहर के बाहर खड़े रहते हैं कि जिससे उन्हें ईश्वर के दर्शन हो सकें अर्थात वह ईश्वर की प्रतीक्षा करते रहते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) भाषा सधुक्कड़ी है।
(ख) कबीर ईश्वर के मिलन को व्याकुल हैं अर्थात उनके विरह को दर्शाया गया है।
(ग) कबीर के भावनात्मक रहस्यवाद का निदर्शन होता है।
(घ) कबीर बाह्य आडंबरों के स्थान पर स्वंय के प्रयत्नों के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं।

10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अरे भगाओ इस बालक को
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएंगे धरती से
इसके साथी और संघाती
'यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अख़बारों में
बड़े-बड़े मिलने आएंगे
लद-लदकर मोटर-कारों में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ नागार्जुन द्वारा रचित 'हरिजनगाथा' नामक लंबी कविता से ली गई है।

व्याख्या → हरिजनों के ऊपर हुए अत्याचार को समाप्त करने के लिए कवि ने एक ~~बालक~~ शक्तियों से युक्त शिशु की कल्पना की है। हरिजन कहते हैं कि यह शिशु बहुत उत्पाती होगा, यह बालक बड़ा होकर इस पृथ्वी से सभी प्रकार के शोषण को समाप्त कर देगा। हरिजन मानते हैं कि यह उनका नेता होगा। इसकी ख्याति पूरे विश्व में होगी, अखबारों में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इसका नाम होगा। लोग इससे दूर-दूर से मिलने हेतु आएंगे।

विशेष → (क) भाषा सहज एवं सरल है।

(ख) दलितों में उत्पन्न हो रही क्रांति चेतना को दर्शाया गया है।

(ग) विदेशज शब्दों जैसे - लीडर, मोटर इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

(घ) मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव भी नजर आता है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'अपनी मूल प्रकृति में पद्मावत एक त्रासदी है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

साही का मानना है कि पद्मावत अपनी मूल प्रकृति में एक त्रासदी ही है। साही का मानना है कि संभवतः एशिया या भारत की यूनानी परंपरा पर लिखी गई पहली त्रासदी है।

वस्तुतः किसी भी रचना को त्रासदी मानने हेतु कुछ कसौटियां निर्धारित की गई हैं जैसे - नायक धीरोदात्त होना चाहिए; नायक को कोई भूल करना चाहिए जिसे हैमर्शिया कहते हैं, अंत में नायक पराजित होता है और उसकी मृत्यु हो जाती है अर्थात् विरेचन की स्थिति उत्पन्न होनी चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्मावत रचना का नायक धीरोदात्त है। वह उच्च कुल से संबंधित है। किंतु उसमें वीरता कुछ कम मात्रा में है, उसमें भावुकता अधिक है। उसकी इसी दुर्बलता के कारण बार-बार रचना में शिव-पार्वती एवं हनुमान को आना पड़ता है।

पद्मावत में रत्नसेन द्वारा अलाउद्दीन से संधि करना उसकी 'हैमर्शिया' मानी जा सकती है। गोरा-बादल के बार-बार मना करने के बावजूद वह अलाउद्दीन को महल में लाता है और इसी का परिणाम है कि वह धोखे से दर्पण में ~~देख~~ पद्मावती को देखकर उसे प्राप्त करने हेतु तत्पर हो जाता है। वह रत्नसेन को बंदी बना लेता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचना के अंत में रत्नसेन की मृत्यु हो जाती है और नागमती एवं पद्मावती जौहर कर लेती हैं। ऐसे में पाठक को घट विरेचन जैसी अनुभूति देता है।

किंतु इसमें रत्नसेन की हत्या खलनायक अलाउद्दीन के हाथों नहीं होती है, बल्कि देवपाल के हाथों होती है। ~~ऐसे~~ जबकि त्रासदी होने के लिए आवश्यक है कि नायक, खलनायक के हाथों पराजित होता है। ऐसे में इसे त्रासदी मानना कठिन हो जाता है।

वस्तुतः यह जायसी की रचनादृष्टि का परिणाम है। ~~कि~~ जायसी नहीं चाहते थे कि रत्नसेन (नायक) का खलनायक के हाथों पराजित दर्शाया जाए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः हम कह सकते हैं कि बाह्य ढाँचा में पद्मावत भले ही त्रासदी न हो, किंतु आंतरिक स्तर पर वह त्रासदी के तत्वों को धारण करती है।

बहुत अच्छा

$11\frac{1}{2}$ / 20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी रीतिकालीन कवि हैं। बिहारी दरबार में रहकर रचनाएँ लिखा करते थे। ऐसे में यह स्वाभाविक था कि वे रसिक समाज का मनोरंजन करते। बिहारी ने रसिक समाज के लिए 48 मात्राओं के दोहा छंद को चुना। उन्होंने अपने दोहा में बिंब योजना का ~~भी~~ अप्रतिम प्रयोग किया है।

बिहारी की बिंब योजना का ही सामर्थ है कि उनके किसी भी दोहा को पढ़कर चलचित्र देखने जैसा अनुभव होता है। उन्होंने श्रव्य बिंब, दृश्य बिंब, एवं स्पर्श बिंब इत्यादि को अपने काव्य में महत्व दिया।

बिहारी की बिंब योजना हिंदी साहित्य ~~का~~ में अद्वितीय है। उन्होंने एक दोहे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ने राधा - कृष्ण के हास - परिहास को इस प्रकार प्रकट किया है कि पाठक को ऐसा प्रतीत होता है कि राधा - कृष्ण उसी के सामने दृश्यांकन कर रहे हों। उदाहरण के लिए -

"बतरस लालच लाल की,
मुरली धरी लुकाय,
सौंह करै, भौंहनु हंसै,
दैन कहै नट जाय।"

बिहारी की बिंब योजना की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उनकी अनुभाव योजना है। बिहारी अनुभाव के कवि है। अतः उनके यहाँ विभाव, उद्दीपन भाव इत्यादि नहीं आते हैं। उदाहरण के लिए इस दोहे में सात पदों के माध्यम से सात क्रियाओं का वर्णन है -

"कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत,
खिलत लजियात
भरे भौहनु करत है नैननु हुई सौं बात"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी के काव्य में ध्वन्यर्थव्यंजना का सुंदर प्रयोग मिलता है। उदाहरण के लिए 'झमकि-झमकि टहलैं करें'। बिहारी की बिंब योजना की सबसे महत्वपूर्ण ~~इसका एक~~ विशेषता 'उपलक्षित बिंबों' का प्रयोग है। बिहारी अमूर्त विषय को भी मूर्तता प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए-

"तंत्रिनाद कवित्त रस, सरस राग रति रंग।
अनबूडे-बूड़े सब तिरे, जे बूड़े सब अंग।"

बिहारी की बिंब योजना हिंदी में अद्वितीय है। यदि कोई उन्हें बिंब योजना के संदर्भ में टक्कर दे सकता है, तो वह हैं- सूरदास एवं निराला।

अच्छा

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पद्मावत में नागमती के विरह-वर्णन की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्मावत को यदि किसी आधार पर सर्वश्रेष्ठता प्रदान की जाती है, तो वह है नागमती विरह - वर्णन। जायसी ने नागमती के विरह वर्णन को इतनी विशदता के साथ वर्णित किया है कि वह हिंदी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ विरह वर्णन के तौर पर स्वीकार किया जाता है।

नागमती के विरह वर्णन की सर्वप्रमुख विशेषता है - उसकी विरह वेदना रानी की विरह वेदना नहीं है, बल्कि एक आम स्त्री की विरह वेदना। नागमती अपने विरह में इतनी व्याकुल है कि वह अपना 'रानीपन' खो देती है और अपने विरह को आम नारी से जोड़ती है। उदाहरण के लिए -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"जेठ जरै, जग बहै लुआरा,
उठै बवंडर धिकै पहारा।"

नागमती अपने विरह में इतनी व्याकुल है कि उसके विरह का 'आत्मविस्तार' हो गया है और वह प्रकृति से भी उसके विरह में शामिल होने की अपेक्षा करती है। जैसे कि सूर की गोपियों ~~वनों~~ वृक्षों से कहती हैं - 'तुम कत रहत हरे'। उसी प्रकार नागमती प्रकृति के अंग पक्षियों को संबोधित करती हुई कहती है -

"पिउ सो कहेउ संदेशड़ा, हे भौंरा, हे काग
सो विरहे तोहि धनि जरि मुई,
तेहिक धुआ हमें लाग।"

नागमती के विरह में प्रकृति में उसकी भागीदार बनती है। उदाहरण के लिए -

"सारी रात फिरै कोउ नहीं बोला,
आधी रात विहंगम बोला।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागमती का विरह 'ग्राहस्थिक विरह' का उदाहरण है। शुक्ल जी ने कहा भी है कि "यह निर्लज्ज आशिक या माशूकों का विरह नहीं, सात्विक नारी की विरह वाणी है।" उदाहरण के लिए-

"पुरत नछत्र सिर ऊपर आवा।
दौ बिनु नाँह मंदिर को दावा।"

नागमती मध्यकालीन नारी है, वह जानती है कि उसे पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त नहीं है सकते, इसलिए वह रत्नसेन और पद्मावती के साथ रहने को भी तैयार है। इतना ही नहीं नागमती अपने पति के लिए सर्वस्व अर्पण करने को तैयार है। नागमती को भोग की भी इच्छा नहीं है बल्कि उसका उद्देश्य केवल अपने पति की प्राप्ति है।

नागमती विरह वर्णन को कुछ समीक्षक मध्यकालीन नारी की पराधीनता के रूप में देखते हैं। किंतु फिर भी यह वर्णन हिंदी साहित्य का अद्वितीय वर्णन है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) पद्मावत कितना इतिहास है और कितनी कल्पना? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पद्मावत के संदर्भ में कुछ समीक्षकों का मानना है कि पद्मावत एक काल्पनिक रचना है जबकि कुछ समीक्षक इसे इतिहास के तौर पर स्वीकार करते हैं।

पद्मावत के संदर्भ में किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले आवश्यक है कि ~~पहले~~ पद्मावत का इतिहास एवं कल्पना के संदर्भ में विश्लेषण किया जाए।

पद्मावत के प्रारंभिक अंश को देखा जाए तो उसमें काल्पनिकता अधिक नजर आती है। रत्नसेन को पद्मावत के बारे में पता चलना, उसकी प्राप्ति हेतु सिंहल द्वीप जाना आदि कल्पना ही है। दरअसल यह अवधी में प्रचलित लोकप्रिय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आख्यान से लिया गया है। अवध से संबंधित सिद्ध नाथ साधुओं ने सिंहल द्वीप में पद्मनी नायिका के संदर्भ में वर्णन किया है। उसी को आधार मानकर जायसी ने यह वर्णन किया है।

किंतु यदि रचना का उत्तरार्ध देखा जाए तो उसमें ऐतिहासिकता अधिक नजर आती है। कर्नल टाड ने 'राजपुताने का इतिहास' तथा अबुल फजल ने 'आइने अकबरी' में अनेक वर्णन किए हैं। इन दोनों रचनाओं में रत्नसेन का उल्लेख मिलता है उसकी सुंदर स्त्री के बारे में भी चर्चा मिलती है। राजपुताने का इतिहास में कर्नल टाड ने अलाउद्दीन का रत्नसेन पर दो बार आक्रमण करने का वर्णन किया है, जिसमें दूसरे युद्ध में रत्नसेन पराजित होता है और संधि करने को बाध्य होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तो वहीं अबुल फजल ने माना है कि अलाउद्दीन दूसरे युद्ध में रत्नसेन को पराजित कर देता है और उसकी मृत्यु हो जाती है।

इस खण्ड में भी देखें तो जायसी ने अपनी कल्पनाओं से अनेक वर्णन शामिल किए हैं। जैसे देवपाल का इतिहास में कोई उल्लेख नहीं मिलता है। जायसी नहीं चाहते थे कि नायक की खलनायक के हाथों हत्या हो, इसलिए उन्होंने देवपाल नामक चरित्र को गढ़ा।

इसके अतिरिक्त जायसी ने राघव-चेतन प्रसंग, शिव पार्वती तथा हनुमान इत्यादि का वर्णन भी अपनी कल्पना के अनुसार प्रयोग किया है। इसी प्रकार जायसी दिखाते हैं कि रत्नसेन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अलाउद्दीन के साथ संधि तो करता है, लेकिन वह पद्मावती का अलाउद्दीन को दिखाने संबंधी शर्त को नहीं मानता है। जबकि इतिहास में माना जाता है कि रत्नसेन ने पद्मावती का अलाउद्दीन को दिखाया था।

अतः हम कह सकते हैं कि पद्मावत इतिहास एवं कल्पना का मिश्रण है। वैसे भी किसी काव्यगत रचना से इतिहास होने की कल्पना करना बेमानी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जायसी और कबीर के रहस्यवाद की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जायसी एवं कबीर के रहस्यवाद में व्यापक अंतर देखने को मिलता है।

कबीर नाथपंथ में दीक्षित थे। ऐसे में उन्होंने साधनात्मक रहस्यवाद को महत्व दिया, जो अत्यंत एकांतिक एवं रूखा था। जबकि जायसी का रहस्यवाद उपनिषदीय सर्ववाद या सर्वेश्वरवाद पर आधारित है। वह सृष्टि को ईश्वर की अभिव्यक्ति मानते हैं। उदाहरण के लिए -

"जस दिन दसन जोति निरमई,
बहुतै - बहुतै जोति जोति भई,
रवि - शशि पुण्य नखत ओहि जोति"

किंतु यह कहना है कि कबीर का रहस्यवाद एकांतिक है', भ्रामक है। उनके रहस्यवाद में सर्ववाद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एवं सर्वेश्वरवाद के लक्षण देखने को मिलते हैं। जब वह भावनात्मक रहस्यवाद को प्राथमिकता देते हैं, तो वह भी पृथ्वी या सृष्टि को ईश्वर की अभिव्यक्ति मानते हैं। उदाहरण के लिए-

~~[illegible]~~

"लाली मेरे लाल की,
जित देखूं तित लाल,
लाली देखन मैं चली,
मैं भी हो गई लाल।"

इसी प्रकार जायसी के काव्य में भी एकांतिक रहस्यवाद के लक्षण देखने को मिलते हैं। जब वे कहते हैं कि 'प्रिय प्यारे हिरदय से मोहीं मिलाव', वह एकांतिक रहस्यवाद का ही वर्णन कर रहे होते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः हम कह सकते हैं कि जायसी एवं कबीर दोनों के काव्य में एकात्म एवं सर्ववाद संबंधी रहस्यवाद देखने को मिलता है। किंतु कबीर के काव्य में साधनात्मक रहस्यवाद अधिक है, अतः उनका रहस्यवाद एकांतिक एवं रूखा हो जाता है। जबकि जायसी के काव्य में भावनात्मक रहस्यवाद अधिक है। अतः उनका रहस्यवाद सुंदर, रमणीय एवं सर्वत्रवाद से जुड़ जाता है।

अच्छा

8 1/2 / 15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दिनकर की कविता 'कुरुक्षेत्र' में व्यक्त 'मानवतावादी दर्शन' के स्वरूप पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिनकर ने कुरुक्षेत्र में युद्ध संबंधी प्रसंग का वर्णन किया है। किंतु उनकी रचना में ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जहां उनका मानवतावादी दर्शन स्पष्ट होता है।

मानवतावादी दर्शन में मानव केंद्र होता है। पारलौकिक शक्तियों की बजाय इहलोक पर अधिक ध्यान दिया जाता है। भीष्म पितामह परलोकवाद का खण्डन करते हुए कहते हैं -

"ऊपर सब शून्य, शून्य
कुछ भी नहीं है गगन में।"

मानवतावादी दर्शन में व्यक्ति से जीवन से जुड़ी समस्याओं जैसे - आर्थिक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थिति, सामाजिक कुरीतियों शोषण इत्यादि का वर्णन मिलता है। कुरुक्षेत्र में भी आर्थिक विषमता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए इसे हिंसा का कारण माना है। उदाहरण के लिए –

"जब तक मनुज - मनुज
का यह सुख भाग नहीं सम होगा,
समित न होगा कोलाहल।"

दिनकर कुरुक्षेत्र में विज्ञान की महत्ता को भी स्पष्ट करते हैं। विज्ञान के अनुचित प्रयोग के संदर्भ में दिनकर कहते हैं –

"मनुष्य के हाथ में पड़कर,
विज्ञान के ये फूल,
वज्र बनकर टूटे, शुभ धर्म
अपना भूल।"

दिनकर ने कुरुक्षेत्र में यह भी दर्शाया है कि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं। बल्कि युद्ध को अंतिम विकल्प के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। वह कुरुक्षेत्र के के अंत में मानव के कल्याण की कामना करते हुए हैं कि एक दिन 'यह पृथ्वी मुक्त होगी रण-भीति से।' वे स्पष्ट करते हैं कि मानव सभ्यता विचलनों को सहते हुए बनी रहेगी।

अतः हम कह सकते हैं कि दिनकर की रचना कुरुक्षेत्र में मानववादी लक्षण देखने को मिलते हैं।

और गहराई लाएँ
डिटेल उत्तर दें

7½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है। संदेह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो संदेह का ही परिणाम है। वह संपूर्ण आत्मसमर्पण है। उसके मंदिर में तुम परीक्षक बनकर नहीं, उपासक बनकर ही वरदान पा सकते हो।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचंद द्वारा रचित 'गोदान' नामक उपन्यास से ली गई है।

व्याख्या ⇒ मालती, मिस्टर मेहता से कहती है कि प्रेम संदेह से ऊपर है। यह भोग की वस्तु नहीं है, बल्कि प्रेम आत्मिक वस्तु है। प्रेम में यदि कहीं भी संदेह है, तो वह प्रेम सफल नहीं हो सकता है। तुम मेरी निरंतर परीक्षा लेते रहे, जो कि प्रेम में उचित नहीं है। तुम यदि त्याग करोगे तभी प्रेम पा सकते हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष ⇒ (क) भाषा, सरल एवं सहज है

(ख) सूत्र शैली का प्रयोग किया है। जैसे - प्रेम जो संदेह से ऊपर समझती है।

(ग) वर्तमान में योगयुक्त प्रेम पर ये पंक्तियाँ प्रश्नचिन्ह लगाती हैं।

(घ) छायावादी रोमानी किस्म के प्रेम का वर्णन।

Good 6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) संभवत: पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ मोहन राकेश द्वारा रचित 'आषाढ़ का एक दिन' नामक नाटक से ली गई है।

व्याख्या ⇒ ~~कुलदीपक~~ कालीदास जब कश्मीर से लौटकर आता है, तो वह मल्लिका से कहता है कि तुम संभवत: उसे पहचानती नहीं हो। वह कहता है कि न पहचानना भी स्वाभाविक है क्योंकि अधिकार भावना से युक्त होने के पश्चात वह पहले वाला कालीदास नहीं है। उसमें व्यापक परिवर्तन हुआ है, अब तो वह रचनाकर्म उत्कृष्टता पूर्वक नहीं कर पाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव नजर आता है।

(ख) भाषा सरल, ~~एवं~~ सहज एवं बोधगम्य है।

(ग) उत्तम पुरुष शैली का उत्तम प्रयोग किया है।

(घ) वर्तमान के सुविधाभोगी व्यक्तियों, जो अपने ~~अ~~ इच्छाओं के विपरीत जीवन जी रहे हैं, ~~को~~ उन्हें इच्छाओं के अनुकूल जीवन जीने के प्रेरित करती है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस मेरी बाँहों की जकड़ कसती जाती है, कसती जाती है। रजनीगन्धा की महक धीरे-धीरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झुठ था, मिथ्या था, भ्रम था।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ मन्नू भण्डारी द्वारा रचित 'यही सच है' नामक कहानी से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ दीपा जब संजय के प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करती है, तो संजय उसे प्रेमालिंगन करने लगता है। दीपा कहती है कि वह इस स्थिति सब-कुछ भूल जाती है, उसे केवल संजय की ही अनुभूति होती है। वह संजय के साथ एकांतिक प्रेम करना चाहती है। दीपा कहती है कि संजय ही उसका वास्तविक प्रेमी है, यही उसके जीवन का सच है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विश्लेषण → (क) इन पंक्तियों में दीपा के मानसिक द्वंद्व को दर्शाया गया है।

(ख) ये पंक्तियाँ डायरी शैली में लिखी गई हैं।

(ग) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(घ) यह प्रेम रोमानी नहीं वास्तविक है।

(ङ) प्रतीक योजना का सुंदर प्रयोग किया गया है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ रामविलास शर्मा द्वारा रचित निबंध 'तुलसी साहित्य काव्य के मैं सामंत-विरोधी मूल्य' से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ शर्मा जी तुलसी के काव्य में सामंत विरोधी पक्षों को उभारते हुए कहते हैं कि तुलसी ने अपने काव्य में कोल, किरात जाति के लोगों को प्राथमिकता दी है, जिनका मुगल काल में आखेट होता था या काबुल में दास के रूप में बेच दिया जाता था। शर्मा जी कहते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्य में इन्हें बेगार करने के लिए बाध्य किया जाता था। इस दृष्टि से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तुलसीदास का काव्य प्रगतिशील है।

विशेष → (क) अतीत में हुए जनजातियों पर शोषण को उजागर किया गया है।

(ख) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(ग) विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

(घ) मार्क्सवादी विचारधारा दृष्टिगोचर होती है।

5 1/2
10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' नामक निबंध से ली गई हैं।

व्याख्या → भट्ट जी भारत के अतीत का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वैदिक काल के पश्चात भारत में अनेक धर्मों, परंपराओं का उदय हुआ। यह स्थिति कुछ वैसी ही थी, जैसी ~~कोई~~ किसी स्त्री के एक से अधिक पुरुषों से संबंध होते हैं। इसी प्रकार हिन्दू धर्म, जैन, बौद्ध, शैव, शाक्त इत्यादि सम्प्रदायों एवं धर्मों में बंट गया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष ⇒ (क) अतीत में सनातन धर्म में हुए विभाजन का वर्णन किया गया है।
(ख) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।
(ग) मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग किया है।
(घ) ~~शैली~~ विवरणात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

$5\frac{1}{2}$

10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A2

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'गोदान' नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान हिंदी साहित्य का कालजयी उपन्यास है। गोदान को प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कृति माना जाता है। इस रचना के संदर्भ में यह प्रश्न उठता है कि प्रेमचंद ने इसका नाम 'गोदान' क्यों रखा?

वस्तुतः किसी भी रचना के नामकरण के संदर्भ में कुछ कसौटियाँ होती हैं। जैसे वह नाम संपूर्ण कथ्य को व्यक्त करने में समर्थ है, पूरी रचना की केंद्रीय बिंदु उसके इर्द-गिर्द घूमता है।

'गोदान' के आदि अर्थ की बात करें, तो इसका तात्पर्य होता है 'गाय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का दान'। प्रेमचंद गोदान के माध्यम जो कि प्रतीकात्मक नाम है, अपनी रचना में देश समाज की सभी समस्याओं को व्यक्त करने में सफल रहे।

~~गोदान~~ होरी गाय की आकांक्षा इस उपन्यास के प्रारंभ से लेकर अंत तक देखने को मिलती है और पूरी रचना का केंद्र बिंदु गाय ही है।

होरी की ~~आकांक्षा~~ प्रारंभ से ही एक गाय लेने की है। वह धनिया से कहता भी है कि यदि घर के बाहर गाय बंध जाए, तो घर की शोभा ~~बन~~ बढ़ जाएगी। इसी क्रम में वह झोला से गाय लेता है। इसी दौरान गोबर को झोला की विधवा पुत्री झुनिया से प्रेम हो ता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

है। इसका परिणाम होता है कि झुनिया को लेकर पंचायत होरी पर जुर्माना आरोपित करती है; तथा अंत में गाय को जहर देकर हत्या कर दी ~~गई~~ जाती है।

इस सबका परिणाम होता है कि होरी ऋणग्रस्त बना रहता है। 'गोदान' के माध्यम से प्रेमचंद तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था पर भी चोट करते हैं। होरी के पास पैसे न होने के बावजूद उसकी मृत्यु के पश्चात धनिया से 'गोदान' कराने को कहा जाता है।

~~यदि हम देखें~~ अब प्रश्न उठता है कि यदि ~~योग्य~~ इस उपन्यास का न नाम 'गोदान' न होता, तो क्या

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होता ? इसके कुछ अन्य होरी की मृत्यु, किसानों का शोषण, गरीबी इत्यादि हो सकता था।

किंतु जितनी समर्थता के साथ 'गोदान' नाम इस रचना के कथ्य को स्पष्ट करने में समर्थ रहा है। उतना संभवत: और कोई ~~वहा~~ नाम नहीं हो सकता है। अत: 'गोदान' इस उपन्यास का सर्वश्रेष्ठ नाम है।

अच्छा

11½/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' की श्रेष्ठता के कारणों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ईदगाह प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है। ईदगाह संवेदना एवं शिल्प दोनों दृष्टियों से ही श्रेष्ठता को धारण करती है।

ईदगाह में गरीबी, वृद्ध समस्या एवं सामाजिक संबंधों एवं सामाजिक-आर्थिक विषमता को दर्शाया गया है।

ईदगाह में प्रेमचंद ने मनोविज्ञान का संपुट प्रयोग किया है। उन्होंने हामिद के माध्यम से दर्शाया है कि कैसे गरीबी बच्चों से उनका बचपना छीन लेती है। ईदगाह की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह रचना सामान्य बाल मनोविज्ञान का अतिक्रमण करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इसी संदर्भ में कहा जाता है कि "हामिद ने बुढ़िया अमीना का पार्ट खेला था और ~~बुढ़िया~~ वृद्ध अमीना बालिका हो गई थी।"

प्रेमचंद ने ईदगाह में सामाजिक संबंधों का भी वर्णन किया है। वह दर्शाते हैं कि कैसे समाज में व्यक्ति एक-दूसरे से जुड़ा रहता। वह लिखते हैं कि ईद के दिन कोई किसी से धागा मांगने गया, तो कोई किसी से काज कढ़वा रहा है।

प्रेमचंद ने हामिद और उसके मित्रों के संवाद के माध्यम से समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं प्रशासनिक संवेदनहीनता को भी उजागर किया

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है। उदाहरण के लिए – "यह कांसिटिबल रात में पहरा देगा। तुम बहुत जानते हो अमजद मियां, यह कान्स्टेबल चोरी भी करवाते हैं।"

ईदगाह शैली की दृष्टि से भी श्रेष्ठता धारण करती है। इसमें हिंदुस्तानी भाषा का प्रयोग मिलता है, जिसमें हिंदी एवं उर्दू का समावेश मिलता है। प्रेमचंद ने इसमें लोकोक्तियों, मुहावरों, व्यंग्य इत्यादि का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है।

अतः हम कह सकते हैं कि ईदगाह प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है।

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'यही सच है' एक दुनिया समानांतर में संकलित कहानी है। यही सच है, मन्नू भण्डारी की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है। यह कहानी 'नई कहानी आंदोलन' की सर्वश्रेष्ठ में से एक है। यह सच है कि शिल्प योजना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

'यही सच है' कहानी डायरी शैली में लिखी गई रचना है। इसमें कहानी चरित्र दीपा के डायरी के कुछ पन्नों का उल्लेख किया गया। डायरी शैली में होने के कारण यह व्यक्ति के अंतरंग पलों को भी व्यक्त करने में सफल रही।

'यही सच है' कहानी के कथानक में क्रमिक विकास देखने को नहीं मिलता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है, बल्कि नई कहानी की आंदोलन की अन्य कहानियों की तरह इसका कथानक भी टूटा है।

'यही सच है' कहानी में भण्डारी जी ने व्यक्ति के भीतर विद्यमान 'द्वंद्व' को उभारा है। वह दर्शाना चाहती हैं कि एक ही व्यक्ति में एक ही स्थिति में कैसे अलग-अलग विचार आते हैं। उदाहरण के लिए पहले दीपा, निशीथ को भूल जाना चाहती है और 'संजय' को ही वास्तविक प्रेमी के रूप में स्वीकार करती है, किंतु जैसे निशीथ उसके पास आता है कि दीपा सोचती है कि बचपन का प्रेम ही वास्तविक है, यही सच है।

'यही सच है' में प्रतीक योजना का सुंदर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

प्रयोग किया गया है। इसका नाम ही एक प्रतीक को धारण करता है। मन्नू जी इसके नाम से माध्यम से ही कथ्य को स्पष्ट करने में सफल रही।

यही सच है में भाषा पात्रानुकूल है, कहीं-कहीं मौन भाषा के माध्यम से ही कथन को कहा गया है।

अतः 'यही सच है' शिल्प की दृष्टि से 'एक दुनिया समानांतर' कहानी संकलन की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है।

अच्छा

8½/15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation